Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

अहिंसक एकीकरण की विजयगाथा : लौहपुरुष सरदार पटेल का कूटनीतिक नेतृत्व

राजेश कुमार
सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर (चूरू)

सारांश

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत की भाग्य लिपि अपनी लौह कर्मठता से लिखी थी यह लिपि देश का अखण्ड अनश्वर भूगोल बनकर उनके नेतृत्व कौशल का जयजयकार करती है गाँधीजी ने राष्ट्र जागरण का जो शंख फूँका था सरदार ने उस घोष को अपने जीवन में प्रवृति रुप देकर राष्ट्र की विविध मुखी शक्तियों को एक प्रबल प्रवाह में संगठित कर दिया। बिस्मार्क सही मायने में लौहपुरुष नहीं था उनका जर्मनी का एकीकरण हिंसा पर टिका था और हिंसक तरीके से जर्मनी के बाकी राज्यों पर कब्जा कर उनका सम्राट बन बैठा।जबकि सरदार पटेल ने अहिंसक तरीके से भारत का एकीकरण किया इसलिए लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल है न कि बिस्मार्क।

बीज शब्द .. सरदार वल्लभभाई पटेल, भारतीय एकीकरण, कूटनीति, राज्य पुनर्गठन, रियासतें विलय, भारतीय स्वतंत्रता, लौह पुरुष, राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक नेतृत्व।

प्रस्तावनाः–

सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के इतिहास में एक ऐसे कूटनीतिज्ञ और नेता के रूप में उभरे जिन्होंने देश की सैकड़ों रियासतों को बिना खून–खराबे के भारतीय संघ में विलय करवाकर राष्ट्रीय एकता की अनूठी नींव रखी। उनका यह कार्य न केवल एक राजनीतिक सफलता थी बल्कि अहिंसा, बातचीत और दृढ़ता की एक मिसाल भी बना।

सरदार पटेल ने जब गृह मंत्री का पद संभाला, तब देश में 560 से अधिक रियासतें थीं, जिनमें से अधिकांश ने भारत में मिलने या स्वतंत्र रहने का विकल्प चुना था। इन रियासतों को एकजुट करना एक बड़ी चुनौती थी, परंतु सरदार पटेल ने कूटनीति, समझौता और जनभावना को प्राथमिकता देते हुए यह असंभव सा लगने वाला काम संभव कर दिखाया।

उनके नेतृत्व में जूनागढ़, हैदराबाद जैसी रियासतों को भी भारत में शामिल किया गया, जहाँ आवश्यकता पड़ने पर सैन्य कार्रवाई भी हुई, लेकिन मुख्यतः यह प्रक्रिया अहिंसक और जनतांत्रिक रही। सरदार पटेल ने राजाओं को यह समझाया कि वे जनता के सेवक हैं और उन्हें जनहित को सर्वोपरि रखना चाहिए। सरदार पटेल और जर्मनी के बिस्मार्क की तुलना करने वालों को यह ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण हिंसा के बल पर किया, वहीं सरदार पटेल ने भारत का एकीकरण अहिंसक तरीकों से किया। इसलिए वे सही मायने में "लौह पुरुष" हैं, जिन्होंने राष्ट्र की विविधता के बीच एकता का सूत्र पिरोया। आज भी सरदार पटेल की विरासत भारत की एकता और अखंडता का प्रतीक है। उनके नाम पर बनी "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" और राष्ट्रीय एकता दिवस उनके अद्वितीय योगदान को स्मरण कराते हैं

सरदार का कूटनीतिक युग : 1945 से 1950:–

लगभग 42 साल की उम्र में 1918 में राजनीति में प्रविष्ट होने वाला वाला बैरिस्टर वल्लभ भाई पटेल मात्र एक दशक यानी1928 में ही राजनीति के सरदार हो गये। बारदोली सत्याग्रह के बाद वे देश ये सरदार के रूप में पहचाने जाते थे। उनके सरदारत्व का सन 1928 से देश के राजनीतिज्ञ और सरकारी तन्त्रो को तो साक्षात्कार हो ही रहा था परन्तु 1945 से 1950 उसकी मृत्यु तक उनका सरदात्व सोलह कलाओं में विकसित हुआ इन पाँच वर्षो मे सरदार ने जो काम किया वो कोई और नहीं कर सकता था। इस प्रकार इन पांच वर्षों में सरदार वल्लभ भाई पटेल कूटनीति के भी सरदार हो गये।

5 जुलाई 1949 को रियासत विभाग की स्थापना की गयी। सरदार पटेल ने श्री वी पी मेनन को इसका सेक्रेटरी बना दिया। इसी

दिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने देशी राज्यों के नाम एक सन्देश में उनसे अनुरोध किया कि वे भारत सरकार के साथ शीघ्र ही यथापूर्व समझौता करके अपने रक्षा, विदेश सम्बन्ध तथा यातायात केन्द्र सरकार को सौप दे। 10 जुलाई 1947 को कई राजाओं तथा देशी राज्यों के मन्त्रियों ने सरदार पटेल के निवास स्थान पर उनसे भेट की। उनमें पटियाला व ग्वालियर के महाराजा भी थे। उन्होंने सरदार के साथ दिल खोलकर वार्तालाप किया और यह स्वीकार किया कि देशभक्ति के दृष्टिकोण से भी देशी राज्यों व शेष भारत का सहयोग वांछनीय है श्री जिन्ना ने इस योजना का विरोध किया।

भारत का जो नक्शा ब्रिटिश शासन ने रचा थाउसकी 40 प्रतिशत भूमि इन देशी रियासतों के पासथी। शेष 60 प्रतिशत भूमि जो ब्रिटिश इण्डिया के रूप में पहचानी जाती थी उसका भी 20 प्रतिशत भाग विदेशी भूमि के रूप में जाना जाता था। लॉर्ड माउण्टबेटन ने 15 जुलाई 1947 को नरेन्द्र मण्डल की एक पूरी बैठक बुलाई। उस समय नरेन्द्र मण्डल के अध्यक्ष भोपाल का राजा था जो भारत संघ में मिलने का इच्छुक नहीं था। उन्होंने जोधपुर, धौलपुर के राजाओं को भी अपने पक्ष में कर रखा था। वास्तव में इस समय मे देशी राज्य की समस्या इतनी भीषण थी कि कांग्रेस का उस समस्या की ओर देखने को साहस भी नहीं होता था

जूनागढ़ का कूटनीतिक हलः–

15 अगस्त 1947 से पहले जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू–कश्मीर को छोड़कर सभी रियासतों ने मिलन पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। जूनागढ़ का नबाब साम्प्रदायिक मुस्लिम प्रवृति का था। उन्होंने भारत में शामिल होने का आश्वासन देकर भी पाकिस्तान में मिलना पसन्द किया पाकिस्तान से गुण्डे आकर वहाँ की हिन्दू प्रजा को अनेकों तरह के कष्ट देने शुरू कर दिए। जनता ने भारत सरकार से अपील की लेकिन वैधानिक अड्चन के कारण सरदार वल्लभ भाई पटेल ने इस मामले में सीधा हाथ डालना उचित नहीं समझा। जूनागढ़ नें बावरियागढ में घूस कर भारत की सार्वभौमतप पर हमला किया जो भारत संघ मे शामिल हो चूका था। जनता ने सामलदास गाँधी के नेतृत्व में सैनिक रूप में संगठित होकर नबाब को चुनौती दी।सामलदास गाँधी के नेतृत्व मे जूनागढ़ के लिए एक अस्थायी सरकार बम्बई मे बनाईं गयी। इसके बाद अस्थायी सरकार ने जूनागढ़ के विभिन्न गांवों पर कब्जा करके उसे भारतीय संघ मे शामिल करते चले गये। इस प्रकार जूनागढ़ का नबाब एक गोली चले बिना ही वहाँ से चला गया।

सरदार पटेल ने जूनागढ़ में अस्थायी सरकार व मन्त्रिमण्डल का निर्माण करवाया। इस प्रकार सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपनी कूटनीतिक महता से बिना किसी खून खराबे के जूनागढ़ में नवम्बर में भारतीय फौज ने कब्जा कर किया। सरदार पटेल के इस फैसले से माउंटबेटन नाराज हो थे। इसके बाद पटेल ने उनको खुश करने के लिए जूनागढ़ मे जनमत संग्रह करवाया। 90 फीसदी जनता ने भारत विलय को स्वीकार किया। इस प्रकार 20 फरवरी 1948 को जूनागढ़ भारत का हिस्सा बना। सरदार पटेल ने कहा कि राजाओं को यह अच्छी तरह समझ देना चाहिए कि वे जनता के संरक्षक व रियासत के सेवक है।ह उन्हें उत्साहपूर्वक जनता के हितों की रक्षा करनी चाहिए और जनता की भलाई ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए और जनता के परामर्श से ही शक्ति का प्रयोग करना चाहिए

हैदराबाद की समस्या का कूटनीतिक समाधान–

3 जून 1947 की घोषणा के साथ ही निजाम ने भी घोषणा कर दी कि वह भारत व पाकिस्तान की सविधान सभा में अपना प्रतिनिधि नहीं भेजेगा। किन्तु भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम की धारा 7 इसमे बाधक थी इसलिए उसने अपना एक प्रतिनिधि दल दिल्ली भेजा। जूनागढ़ का हश्र देख इग्लैण्ड की सरकार के साथ सौदेबाजी के लिए उनके एक बड़े वकील सर वॉल्टर मॉन्काटॉन को अपना एजेन्ट नियुक्त किया। इसी बीच कासिम रिजवी ने एक मुस्लिम संगठन इतिहादूल मुसलमीन बना लिया और वह लगातार हिन्दुओ पर अत्याचार कर रहा था कासिम रिजवी ने कहा कि हैदराबाद का मुस्लिम तब तक अपनी तलवार को म्यान में नहीं रखेगा जब तक इस्लाम के प्रभुत्व के उद्देश्य की पूर्ति नही हो जाए।

भारतीय सेना प्रमुख करियप्पा के साथ सरदार पटेल ने बैठक की लेकिन जनरल राय बूचर कश्मीर हालात देखते हुए हैदराबाद में सैनिक कारवाई के पक्ष में नहीं था। उधर जिन्ना भी धमकी दे रहा था कि अगर भारत ने हैदराबाद पर आक्रमण किया तो भारत व

पाकिस्तान के मुसलमान उनके खिलाफ उठ खड़े होगे। बैठक खत्म होते ही सरदार पटेल ने सैनिक कारवाई का हुक्म दे दिया। 13 सितम्बर को हैदराबाद में दो तरफ से मेजर जनरल जे. एन. चौधरी ने चढाई की और हैदराबाद के प्रधान सेनापति एल. एदरूप ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसी समय जनता ने मांग रखी कि निजाम को राज्यच्युत कर दिया जावे किन्तु सरदार ने ये उचित नही समझा। इस प्रकार 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद भारत संघ मे विलय हो गया।

फरवरी 1949 में सरदार पटेल ने अपनी दक्षिण की यात्रा के सिलसिले में हैदराबाद की यात्रा की इस अवसर पर सरदार के स्वागत के लिए निजाम हवाई अड्डे पर स्वयं आया। उसने अपने जीवन में प्रथम व अन्तिम बार हाथ जोड़कर सरदार पटेल का अभिवादन किया। और भारत के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा का परिचय दिया।

नौसैनिक विद्रोह का कूटनीतिक हलः–

नौसैनिक ने न्याय व समानता के नाम पर फरवरी के दूसरे हफ्ते में हड़ताल कर दी। नाविको की हड़ताल की बात एक जहाज से दूसरे जहाज पर एक शहर से दूसरे शहर में फैल बम्बई, कराची आदि शहरों की जनता भी अपने नाविक भाईयो के साथ उठ खड़ी हुई। नाविक हड़ताल का मुख्य कारण गौरे अफसरों का नीच व घृणास्पद व्यवहार था नाविको की हड़ताल का मुख्य उद्देश्य यही था कि उनका पुरा बेड़ा सोलह आने देशभक्त भारतीयों का बेड़ा बन जाए। इस तरह नौ सैनिक व गौरे अफसरों के मध्य संघर्ष शुरू हो गया।

देश की निहायत ही खराब हालात को देखते हुए सरदार पटेल ने एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इण्डिया को एक वक्तव्य दिया कि मैं नाविकों से अपील करता हूँ कि वे सब्र व शान्ति से काम ले और जनता से भी निवेदन करता हूँ कि वह सख्त अनुशासन का पालन करें। इस कठिनतम समय में ऐसा कोई कार्य ना करे जिससे शहर की शान्ति भंग हो जाए। नाविकों के लिए सिर्फ एक सलाह यह है कि वे अपने हथियार डाल दे और आत्मसमर्पण कर दे। काग्रेस इस बात की पूरी कोशिश कर रही है कि किसी भी नाविक को बर्खास्त नही किया जाये और शीघ्र ही उनकी माँगे स्वीकार कर ली जाए। हड़ताल कमेटी की ऐतिहासिक बैठक रात 2 बजे शुरू हुई वहाँ सरदार पटेल व जिन्ना साहब की राय पर विचार होता रहा और फिर सभी ने एक मत होकर बिना शर्त आत्मसमपर्ण कर दिया और जहाजों पर काले झण्डे चढ़ा दिये गये इस प्रकार सरदार पटेल ने भारत के इतिहास के इस अभूतपूर्व विद्रोह का कुटनीतिक समाधान कर दिया। कराची में सरदार पटेल ने भाषण देते हुए कहा था कि हमारा जहाज किनारे पहुंच गया है और अब हमे हमारी स्वतन्त्रता दिखाई देने लगी है यह हमारा काम है कि हम उसे ग्रहण कर ले और उसका फायदा उठाये। .

चीन के प्रति दृष्टिकोण :–

सरदार पटेल ने 7 नवंबर 1950 को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखकर चीनी सरकार के सम्भावित आक्रमण की बात कही। उन्होंने पत्र में लिखा कि तिब्बत के साथ चीन का व्यवहार निरी चालाकी है। तिब्बतवासियों ने हम पर जो विश्वास किया उनका हमने द्रोह किया। जवाहरलाल नेहरू द्वारा चीन की संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने के उतावलेपन पर सरदार ने कहा पहले हमें विश्व के अन्य देशों की प्रतिक्रिया को भी देखना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू के हिन्दी चीनी भाई भाई के नारे पर सरदार पटेल ने कहा कि चीन विश्वास के लायक देश नहीं है।उनसे हमें सर्तक रहना चाहिए चीन के प्रति हमे आदर्शवाद के स्थान पर यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इस प्रकार सरदार पटेल ने अपनी कूटनीतिक सोच से चीन के आक्रमण के बारे में पहले ही आगाह कर दिया।

सरदार पटेल और ओटो वॉन बिस्मार्क तुलना का मिथक और वास्तविकताः–

कुछ इतिहासकार, विचारक, विद्वान और पत्रकार बार–बार एक बात ठूसनें की कोशिश करते है कि सरदार पटेल बिस्मार्क है सरदार पटेल को बिस्मार्क के समकक्ष रखकर वे उनका पद ऊँचा कर रहे है ऐसा भ्रम वे पाले हुए है ।

बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण किया और सरदार पटेल ने भारत का एकीकरण किया। इन दो साम्यो के कारण भोले कलमजीवी भ्रम में पड़ जाते है। जर्मनी मुश्किल से दो–तीन दर्जन राज्यों में बँटा होगा और उसमे भी रक्तरंजित खींचतान चल रही थी बिस्मार्क

ने अन्य राज्यो पर बहुत ही घातक विजय प्राप्त की। भयंकर कत्लेआम किया और तलवार के दम पर एकीकरण के नाम पर स्वयं सम्राट बन बैठा। लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल ने 562 रियासतो को बिना खून खराबे के भारतीय संघ में मिला दिया जिनकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। भारत सरकार के गृहमन्त्री के रूप में उन्होने अपने को लौहपुरुष सिद्ध किया किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण कार्य था देशी रियासतो की समस्या को सुलझाना। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बिस्मार्क ने तलवार के दम पर जर्मनी का एकीकरण किया और सरदार पटेल ने कूटनीतिक के दम पर भारत का एकीकरण किया।

प्रसिद्ध लेखक एच–वी. हॉडसन लॉर्ड माउटबेटन को ये कहते बताते है कि "मुझे ये कहने में बिल्कुल कोई संकोच नहीं है कि अच्छा हुआ नेहरू को नए गृह मन्त्रालय का प्रमुख नहीं बनाया। अगर ऐसा होता को सब कुछ बिखर जाता। पटेल ने, जो कि यथार्थवादी है यह काम बेहतर ढंग से किया।"

सयुक्त विन्ध्य प्रदेश संघ की स्थापना पर श्री गाडगिल ने कहा 15 अगस्त 1947 को इस देश की स्थिति प्यासे भिखारी के हाथो मे दिए हुए एक पात्र के सदृश थी किन्तु दुर्भाग्यवश वह पात्र तले मे से फूटा हुआ था लेकिन रियासती जनता की देशभक्ति और समझौते की प्रवृति से एक महान राजनीतिक विश्वकर्मा के द्वारा देश की राजनीतिक एकता का प्रादुर्भाव हो गया। सरदार पटेल ने 562 रियासतों को बिना किसी खून खराबे के भारतीय संघ में विलय करवा दिया। सरदार पटेल के जीवनीकार पी. एन. चोपड़ा उसकी जीवनी, ''सरदार ऑफ इण्डिया'' में, रूसी प्रधानमंत्री निकोलाई बुलगानिन कहते हैं आप भारतीयों का क्या कहना। आपने राजाओं को समाप्त किए बगैर रजवाड़ों को समाप्त कर दिया। बुलगानिन की नजर में ये उपलब्धि बिस्मार्क के जर्मन एकीकरण की उपलब्धि से बड़ा काम है।

एक मार्च को बनारस मे भाषण देते हुए भारत सरकार के निर्माण, खान और बिजली मंत्री श्री काका साहब गाडगिल ने कहा कि सरदार पटेल ने भारत की भलाई के लिए आज वहीं कार्य किया जो 90 वर्षों पूर्व लॉर्ड डलहौजी ने बुराई के लिए किया था यदि महात्मा गाँधी हमारी स्वतन्त्रता के निर्माता है तो सरदार पटेल भारतीय संघ के विश्वकर्मा है। चार मास से भी कम समय में एक भी कड़ा शब्द कहे बिना, केवल देश भक्ति की भावना जागृत करके उन्होंने प्रायः सभी रियासतो की शामिल करा दिया।

डा० राजेन्द्र प्रसाद उनकी अतेंष्टि पर– "सरदार के शरीर को अग्नि जला तो रही है लेकिन उनकी प्रसिद्धि को दुनिया की कोई अग्नि नहीं जला सकी।"

निष्कर्ष:-

सरदार पटेल ने अपने कूटनीतिक प्रहार से बहुत कम समय में सभी रियासतो का एकीकरण करके भारत संघ में विलय कर दिया और इस कूटनीतिक प्रवाह में इतिहास का सबसे बड़ा साम्राज्य ही नहीं बह गया वरन देश की अकर्मण्यता व हीनता भी बह गई। इस शक्तिस्त्रोत से राष्ट्र के निर्जीव मूल्य फिर लहलहाने लगे। उनकी जीवनकाल में कमायी महता और कीर्ति मृत्यु के बाद सी फलती फूलती रहीं। 31 अक्टूबर 2018 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का कथन– "सरदार में शिवाजी जैसा शौर्य व कौटिल्य जैसी कूटनीति थी" एकदम सही प्रतीत होता है। आज देश उन्हीं अद्वितीय ''सरदार'' को श्रद्धा भक्ति के साथ शीश नवाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1–सरदार पटेल एक महामानव (2014) डा० दिनकर जोशी पृष्ठ संख्या 11 से 28

2–राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल लेखक आचार्य चन्द्रशेखर पृष्ठ संख्या 139 से 173

3– MA (POL SCI) VMOU KOTA

4–सरदार ऑफ इण्डिया (1996) लेखक पी एन चौपड़ा

5–लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल लेखक दीनानाथ व्यास

6– सरदार वल्लभ भाई पटेल (एक जीवनी) लेखक श्री रतनलाल बंसल